तृतीय अध्याय

(अ) " पृथ्वीराज : नाटक की ऐतिहासिकता "

नाटक की कथा :

पृथ्वीराज नाटकमें सन १४७३ ईस्वी . के बाद की राज्यस्थान के मेवाड राज्य में घटित घटनाओं का वर्णन किया है। मेवाड के गौरवशाली महाराणा कुम्भा की हत्या करके उसका पुत्र उदयसिंह (ऊदा) महाराणा बनता है लेकिन उसका छोटा भाई रायमल उसे सिंहासन से हठाकर स्वयं महाराणा बनता है।

रायमल की राजनीति युध्द विरोधी होने के कारण देशमें अशांति फैली है। उनके पुत्र संग्रामसिंह,पृथ्वीराज और जयमल असंतुष्ट होकर उत्तराधिकार के प्रश्न पर आपसमें लडते हैं। उदयसिंह का पुत्र सूरजमल तथा एक असंतुष्ट राजपूत सारंगदेव भी असंतुष्ट होकर सत्ता की लालसा से कार्य कर रहे हैं। रायमल के राज्य में टोडा का राव सुरताण लीला अफगान से पराजित होकर शरण आया है। मालवा का मुजफ्फर मेवाड का सदा शत्रु रहा है। गोढार के मीन लोग दस्यु प्रवृत्ति स्वीकार करके निरपराध जनता को लूट रहे है। पृथ्वीराज अपनी उद्दण्डता के कारण मेवाड से निकाला जाता है। मालवा का मुजफ्फर मेवाडपर आक्रमण करता है , तो पृथ्वीराज अपनी वीरता के बलपर मेवाड के सारे संकट दूर करता है और मेवाडमें निष्कंटक राज्य का निर्माण करता हैं।

पृथ्वीराज के परम्पराविरोधी व्यवहार से नाटक का प्रारंभ होता है और पृथ्वीराज द्वारा मेवाड के विजय से नाटक की कथा समाप्त होती है।

इन सब घटनाओं में - उदयसिंह द्वारा कुम्भा की हत्या, रायमल द्वारा मेवाड का राज्य उदयसिंह के हाथों से छीनना , पृथ्वीराज का संग्रामसिंह के विरोध में काम करना, गोढार के मीन लोगों की दस्यु प्रवृत्ति, सूरजमल का मेवाड विरोधी कार्य , मुजफ्फर का मेवाडपर आक्रमण, लीला अफगाण द्वारा सुरताण का पराजय. तारा और पृथ्वीराज का विवाह आदि सभी घटनाएँ ऐतिहासिक ही है। इन ऐतिहासिक घटनाओं के द्वारा दिनेशजी ने आधुनिक भारतीय समस्याओ के प्रति नये दृष्टिकोण से देखा है।

ऐतिहासिक प्रमाण :

नाटक की ऐतिहासिकता के संदर्भ में स्वयं लेखक ने जो भूमिका लिखी है, वह इसकी ऐतिहासिकता सिध्द करती है। वे लिखते हैं - मैने इसकी रचना करते समय अपनी सुविधा असुविधा की चिन्ता न करके ऐतिहासिक सत्यों की रक्षा करने का प्रयत्न किया है। "[१] इतिहास में भी कई घटना और नाम भिन्नभिन्न इतिहासकार अलग अलग बताते हैं। ऐसे समय साहित्यकार का दायित्व रहता है, कि उनमें से सत्य घटना और उपयुक्त नामों का चयन करे। इस समस्या का समाधान भी लेखक ने भूमिका में किया है - " ------ सभी समस्याओं के समाधान के लिए ऐतिहासिक तथ्यों की पर्याप्त छानबीन करनी पडी है और उसके फलस्वरूप जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है, उनके आधारपर ही पात्रों के सम्बन्धों , घटना क्रमों , चरित्रों एवं नामरूपों का निर्णय किया गया है। " [२]

ऐतिहासिक पात्र :

पृथ्वीराज नाटक के लगभग सभी पात्र ऐतिहासिक है। जिनमें महाराणा रायमल, संग्रामसिंह, पृथ्वीराज, जयमल, सूरजमल, राव सुरताण, सारंगदेव, ओझा

---

१) पृथ्वीराज - भूमिका पृ. ५,
२) वहीं, पृ. ६

आदि सभी पुरुष पात्र और तारा एकमात्र प्रमुख नारी पात्र ऐतिहासिक ही है।

कल्पना का समावेश:

पृथ्वीराज शुध्द ऐतिहासिक नाटक है। फिर भी. डॉ. दिनेश जी ने उसमें कल्पना का सहारा लिया है। साहित्यकार इतिहास का ज्ञानी होकर भी इतिहास नहीं लिखता, तो केवल इतिहास का आधार लेकर, उसमें अपनी कल्पना के रंग भरकर मनोरम ऐतिहासिक साहित्य निर्माण करता है। "ऐतिहासिक नाटक ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं घटनाओं को लेकर लिखा जाता है, फिर भी इतिहास और नाटकमें कुछ अन्तर आ ही जाता है क्योंकि नाटककार कल्पना की कूंची से इतिहास के फीके चित्रों में रंग भरकर उन्हें आकर्षक बनाता है।"[१] इस हरिकृष्ण प्रेमी के विचारों के अनुरूप दिनेश जी ने भी पृथ्वीराज की कथा को नाटक बनाने के लिए कल्पना का सहारा लिया है। उसका स्पष्ठ संकेत भूमिका में इसप्रकार दिया है -

"ऐतिहासिक घटनाओं और चरित्रों को नाटकीय बनाने में जिस सीमा तक कल्पना का प्रयोग करने का लेखक को अधिकार होता है, उसी सीमा तक मैने कल्पना का सहारा लिया है, ताकि ऐतिहासिक शुध्दता सुरक्षित रह सके।"[२] पृथ्वीराज के मनमें तारा के प्रति प्रेमभावना निर्माण करने के लिए अंगूठी की कथा काल्पनिक है। तारा के प्रति सूरजमल का आकर्षित होना और उसकी प्राप्ति के लिए प्रतिज्ञा करने की घटना भी काल्पनिक है। पात्रों में कला यह स्त्री पात्र काल्पनिक है। इसका इतिहास मे कोई उल्लेख नहीं, पर तारा की कोई सखी नहीं रही है, यह बात भी नहीं मानी जा सकती। अत: "कला का व्यक्तित्व कल्पित होने पर भी इतिहास विरुध्द नहीं है।"[३]

---

१) कीर्तिस्तंभ - भूमिका पृ. ३
२) पृथ्वीराज - भमिका पृ.६
३) वहीं, पृ. ७

पृथ्वीराज ओझा के पास अंगूठी गिरवी रखते समय तारा की कहानी सुनकर उसके प्रति आकर्षित होना, ओझा की सहायता का वचन पाना, सुरताण की दयनीय स्थिति जानकर उसके संकट दूर करने का प्रयत्न करना यह सब काल्पनिक होकर भी स्वाभाविक लगते हैं।

कल्पना का समावेश : उचित :

नाटक की कथा इतिहास न होकर वह साहित्यिक कृति हो, उसमें कोई नीरसता न आये इसलिए नाटक कारने कल्पित घटनाओं की योजना नाटक में की है। इन काल्पनिक घटनाओं का समावेश करने के पीछे नाटककार का एक निश्चित उद्देश्य रहा है - इतिहास के द्वारा युवकोंपर संस्कार करना। पृथ्वीराज यह ऐतिहासिक नाटक केवल गौरवशाली इतिहास की याद करने के लिए नहीं है , बल्कि उद्देश्य महत्वपुर्ण है। यह नाटक की कथा केवल ऐतिहासिक नहीं तो आधुनिक परिप्रेक्ष्यपर प्रकाश डालने वाली है। नाटक का उद्देश्य और उसकी आधुनिकता पर अगले अध्याय में विचार किया है। अत: यहाँ यहीं स्पष्ट किया जा सकता है , कि नाटकमें कल्पना का समावेश उचित ही है।

पृथ्वीराज नाटक और इतिहास :

इतिहासमें महाराणा कुम्भा के ज्येष्ठ पुत्र उदयसिंह ने पिता की हत्या करके राज्य प्राप्त किया था और उसके भाई रायमल ने प्रजा तथा सामन्तों की सहायता से उदयसिंह को हटाकर महाराणा बने, इसका उल्लेख है। उदयसिंह दिल्ली के बादशहा से मिलकर फिरसे मेवाड को हडपने की कोशिष कर चुके थे, पर नाटकमें उसकी मृत्यू का संकेत बिजली के साधारण धक्के, से बताकर नाटकसे उसे पूर्णत: हठाया गया है। कर्नल टाड के इतिहास में उदयसिंह के पुत्र सूरजमल को एक ओर मेवाड का शुभचितंक तो दूसरी ओर मुजफ्फर की सहायता

से मेवाडपर आक्रमण करनेवाला देशद्रोही भी बताया गया है। नाटक मे केवल उसके देशद्रोही अंश को ही लिया है। इतिहास प्रसिध्द वीर महाराणा सांगा (संग्रामसिंह) को इस नाटक में प्राण के मोहमें छिपनेवाले एक सामान्य व्यक्ति के रूपमें चित्रित किया है। नाटक के अन्ततक उसके मेवाड वापर आने की सूचना भी नहीं दी है। पृथ्वीराज को इतिहासकारों की अपेक्षा अलग दृष्ठिकोणसे देखकर उसके चरित्र को गौरवशाली बनोने का प्रयास नाटककारने किया है।

नाटककारने भले ही अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तथा नाटकीयता निर्माण करने के लिए इतिहास में कल्पना के सहारे परिवर्तन किया है, जो स्वाभाविक ही है। नाटक की कथामें कही भी ऐतिहासिकता को विकृतता नहीं आयी है, तो उससे कथा अधिक पुष्ठ ही बनी है।

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर यह कहा जा सकता है, कि डॉ. दिनेश जी के पृथ्वीराज नाटक के कथावस्तु की आधारभुमि विशुध्दरूपेण इतिहास ही है। डॉ. दिनेश जी ने स्वाभाविक कल्पना के सहारे इतिहासपर एक भव्य और आकर्षक ऐतिहासिक नाट्यकृति का निर्माण किया है।

.....

तृतीय अध्याय :

(आ) " शिल्प की दृष्टि से नाटक का विवेचन "

प्रास्ताविक :

डॉ. रामगोपाल शर्मा " दिनेश " जी के " पृथ्वीराज " नाटक का शिल्प की दृष्टि से विवेचन करने से पहले नाट्य शिल्प को निश्चित करना आवश्यक है। अत: पहले नाट्य शिल्प को देखकर बादमें पृथ्वीराज नाटक का उस के आधारपर विवेचन करे तो वह युक्तिसंगत होगा।

भारतीय नाट्य तत्व :

भारत के प्राचीन आचार्यों ने नाटक के संबंध में बडा गंभीर विवेचन किया है। नाट्याचार्य भरतमुनिने सर्व प्रथम नाटक के शिल्प का सूक्ष्म विवेचन किया। तो नाट्य तत्वों के संबंध में दशरूपककार आचार्य धनंजय एक सूत्र में " वस्तु नेता रसस्तेषां भेदक : " कहकर नाटक के वस्तु, नेता और रस यह तीन तत्व स्वीकार करते है। प्राय: भारत के सभी प्राचीन आचार्य इन्हीं तीन तत्वों को ही मानते है। नाटक का प्रमुख प्रयोजन अभिनय के द्वारा व्यक्त होता है, जिसका स्पष्ठ संकेत इन तीन तत्वों में नहीं मिलता, लेकिन रस तत्व के अन्दर भारतीय आचार्यों ने उद्देश का भी विचार किया है।

पाश्चात्य नाट्य तत्व :

यूनान के प्रसिध्द दार्शनिक अरस्तू ने सर्व प्रथम नाट्यकला पर अपने विचार रखें। आपने " पोएटिक्स " ग्रंथ में नाटक का विवेचन त्रासदी और कामदी इन दो प्रकार से किया है। त्रासदी का विवेचन करते समय अरस्तू ने नाटक के छ. तत्व स्वीकार किए हैं - कथानक, चरित्र चित्रण, पद रचना, दृश्य विधान,

विचारतत्व और गीत। अरस्तु के यहीं छ. तत्व आगे चलकर पाश्चात्य समीक्षक कथावस्तु, पात्र या चरित्र चित्रण, संवाद या कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषाशैली और उद्देश-इस स्वमें स्वीकार करते है।

आज का भारतीय साहित्य पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित है। आधुनिक हिन्दी नाटकों का सृजन भी पाश्चात्य नाटय तत्वों के प्रभाव से ही हुआ है। पाश्चात्य समीक्षकों व्दारा स्वीकृत छ. तत्व भारतीय तीन तत्व मे निहित ही हैं। अन्तर केवल इतना है, की पाश्चात्य समीक्ष रस को नाटक का तत्व न मानकर उद्देश को प्रधानता देते है, तो भारतीय आचार्य रस को नाटक का प्राण या मूल तत्व स्वीकार करते हैं।

बीसवीं शती के पहले भारतीय नाटककार प्राचीन भारतीय नाटय तत्वों के आधारपर नाटकों का सृजन करते, लेकिन बीसवी शती में पाश्चात्य नाटय शिल्प का प्रभाव भारतियों पर हुआ। अत: प्रारंभ के कुछ कालमें भरतीय तथा पाश्चात्य नाटय तत्वों का समन्वित स्व नाटक में दिखाई देता, लेकिन धीरे धीरे पाश्चात्य नाटय शिल्प का प्रभाव गहरा हो गया और उसी के आधारपर हिन्दी में नाटय रचना सुरू हुयी। हिन्दी के आलोचको ने पाश्चात्य नाटय तत्वों का भारतीयकरण कर दिया।

<u>आज के प्रचलित नाटय तत्व</u> :

भारतीय आचार्यों तथा पाश्चात्य समीक्षको द्वारा बताया नाटक का शिल्प आज संमिलीत स्वमें प्रचलीत है। अत: आज के प्रचलित ऐसे नाटय तत्व सात माने जाते हैं –

१) कथावस्तु,
२) चरित्र चित्रण,
३) कथोपकथन,
४) देश, काल, वातावरण,
५) भाषाशैली,
६) उद्देश,
७) रंगमंच तथा अभिनेयता।

डॉ. रामगोपाल शर्मा आधुनिक युग के साहित्यकार हैं। अत: उनके "पृथ्वीराज" नाटक का शिल्प की दृष्टि से विवेचन करते समय आज प्रचलित नाटय तत्व को ही स्वीकार करना होगा। अत: " पृथ्वीराज " नाटक का शिल्प की दृष्टि से विवेचन इन सात तत्वों के आधार पर करें।

१) पृथ्वीराज नाटक की कथावस्तु :

पृथ्वीराज एक शुध्द ऐतिहासिक नाटक है। इसमें राजस्थान के इतिहास का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है , वह कहाँ तक यथार्थ है, यह इसके पहले अध्यायमे ऐतिहासिकता के स्पमें देखा है। यहाँ हमे केवल यह देखना है , कि नाटय शिल्प की दृष्टिसेनाटक की कथावस्तु कहाँ तक सफल है।

" पृथ्वीराज " नाटक की कथा प्रख्यात है, इसमे राजस्थान के इतिहास को आधार बनाया है। कथा का प्रारंभ तारा के गीत से होता है। जिसकी मधुर ध्वनि सुनकर सूरजमल आता है। वह तारा के स्पपर मुग्ध होता है , तारा उसकी घृणा करके चली जाती है। सूरजमल तारा की प्राप्ति करने के लिए प्रतिज्ञा करता है , सारंगदेवउसकी सहायता करने का वचन देता है। सूरजमल और सारंगदेव के संवाद से कथा के उद्देश्य का संकेत मिलता है - " इस समय पृथ्वीराज के मस्तिष्क में मेवाड के उत्तराधिकार की समस्या चल रही है। एक छोटी सी चिनगारी लगाने से सब काम बन सकता है। "[१] इससे यह स्पष्ठ होता है कि, मेवाड मे राजनैतिक संघर्ष चल रहा है। सूरजमल उस संघर्ष को बढाकर स्वंय महाराणा बनने की लालसा से कार्य करने लगता है । मेवाड की राजनैतिक परिस्थिति रायमल के चरित्र से स्पष्ट होती है। मेवाड पर चारों ओर संकट है।राजाओं मे विलासी वृत्ति बढ गयी है। मीन लोगोंने दस्यु वृत्ती (आतंकवाद) अपना ली है। मालवा का सुलतान मेवाड पर आक्रमण करने की तैयारी में है। रायमल शांतिप्रिय स्वभाव के हैं। युध्द का स्मरण आते ही

---

१) पृथ्वीराज पृ. ६

उनका हदय काँपता है। वे मेवाड को निष्कंटक बनाकर प्रजा की सुरक्षा करना चाहते हैं। जनता के सहयोगसे आन्तरिक तथा बाहरी शत्रु का मुकाबला किया जा सकता है, इसलिए जनता के हित का ही कार्य वे करते है। पृथ्वीराज मेवाड के संकट को देखकर परम्परा के नियमों को तोडकर युवराज बनना चाहते हैं और युवराज बनकर मातृभूमि की रक्षा करना चाहते है। इसके लिए वे संग्रामसिंह के साथ संघर्ष करता है। इस द्वंद्व युध्दमे सागा भाग जाता है, जयमल उसका पिछा करने शिवान्तिनगर आता है। वहाँ उनके हाथों विदा राजपूत की हत्या हो जाती है। युध्द और हत्या का प्रसंग सूच्यकथा के द्वारा बताया है। जयमल बदनौर मे आकर राव सुरताण के पास तारा के साथ शादी करने का प्रस्ताव रखता है। तारा शादी के लिए मातृभूमि की रक्षा करने की प्रतिज्ञा लेती है। यहीं नाटक का प्रथम अंक समाप्त होता है।

दूसरे अंकमे सूरजमल और सारंगदेव देशद्रोही के रूपमे विदेशी आक्रमण तथा आन्तरिक असंतोष फैलाने का कार्य करते हैं। महाराणा रायमल को राजपुत्रों के बीज हुए संघर्ष का पता चलता है। वे पृथ्वीराज को अपराधी घोषित करके उसे देश निर्वासिन का दण्ड देते है। जयमल अपनी अनैतिकता के कारण राव सुरताण द्वारा मारे जाते हैं। रायमल पुत्रहत्या करने वाले सुरताण को क्षमा करते हैं। पृथ्वीराज को देश से निकालनेपर तारा निराश होती है। पर्वतीयक्षेत्र में रहकर पृथ्वीराज मीन दस्युवृति का मुकाबला करता है। वहीं रहकर पर्वतीय क्षेत्रमें से दस्यु वृति का भगाने के लिए योजना बनाते हैं। सुरजमल पकडा जाता है। पर पृथ्वीराज उसे मुक्त करते हैं। संग्रामसिंह डाकू के रूपमे अजमेर के करमचन्द के पास रहता है। पृथ्वीराज नादोल के ओझा व्यापारी की सहायता से गोदार को मुक्त करने की योजना बनाता है। महाराणा रायमल अपने भाग्य को ही कोसने लगते है। जब उन्हे सुरजमल का षढयंत्र और उनकी असलियत मालूम होती है तो उन्हें देशद्रोही मानकर पकडने का आदेश देते हैं।

तीसरे अंक में पृथ्वीराज दस्युओ का सरदार मीन नरेश की हत्या करके गोढार को मुक्त करता है और उस कार्य में सहायता करनेवाले ओझा को वहाँ का सरदार बनाता है। महाराणा रायमल पृथ्वीराज की वीरता तथा उदारता को देखकर उसका निर्वासन दण्ड समाप्त करते है और बडे स्वागत के साथ चितौड बुलाते है। पृथ्वीराज जब गोढार को मुक्त करके चितौड वापस जाते हैं, तो तारा को दु:ख होता है। टोडा की मुक्ति के लिए उसकी आशा केवल पृथ्वीराज पर थी, तभी पृथ्वीराज वहाँ आकर तारा की प्रतिज्ञा पूर्ण करने को तैयार होता है। राव सुरताण का आशीर्वाद लेकर वे दोनों टोडा को मुक्त करने जाते हैं। मालवा के मुजफ्फर की सेना सहायतासे सूरजमल चितौडपर आक्रमण करता है। इस युध्दमें स्वंय महाराणा रायमल बडी वीरतासे लड़ते है। अत्यंत निर्णायक क्षणमे पृथ्वीराज्य टोडा को मुक्त करके चितौड की युध्दभूमि मे आता है। पृथ्वीराज के आगमन से ही चितौड की विजय होती है। शत्रुसेना युध्दभुमि से भाग जाती है। पृथ्वीराज और तारा का विवाह होता है। महाराणा रायमल विजय के आनंद से गीत गाते हैं। इस विजय-गीत के साथ ही नाटक की कथा समाप्त होती है।

<u>कथावस्तु की समीक्षा</u>:

"पृथ्वीराज" नाटक की कथावस्तु का आधार राजस्थान का इतिहास है अत: इसका कथानक प्रख्यात है। ऐतिहासिकता के साथ नाटककार ने आधुनिकता की ओर भी ध्यान दिया है। राजस्थान के गौरवशाली इतिहास का आदर्श समाज के सामने रखा है। कथा के प्रारंभ मे ही अगर विषय स्पष्ट हो तो अच्छा है, पृथ्वीराज नाटक का विषय प्रथम अंक के प्रथम दृश्य मे ही स्पष्ट हुआ है।

"रचनात्मकता की दृष्टि से प्रारंभ और अंत का महत्व कथातत्व के लिए अतिशय रहता है। Like horse-race, it is the start and the end that counts all.

प्रारंभ का कुतूहलपुर्ण होना और अंत का प्रभावोत्पादक होना नाटक के लिए आवश्यक है। "[१] इस विचार के अनुसम पृथ्वीराज नाटक की कथा का प्रारंभ कुतूहल पैदा करनेवाला है।

भारतीय नाटय शास्त्र मे कथानक का संगठन कार्यावस्थाओं, अर्थप्रकृतियों एवं संधियो के आधार पर किया जाता है। " पृथ्वीराज " नाटक के कथा संयोजनमें भारतीय तथा पाश्चात्य नाटय तत्व का मिश्रित सम मिलता है। फिर भी भारतीय आचार्यों के बताए तीनो कथा संयोजन के उपकरण पृथ्वीराज नाटक मे मिलते हैं।

कार्यावस्थाए :

आरंभ, प्रयत्न, प्राप्ताशा, नियताप्ति और फलागम ये पांच कार्यावस्थाएँ होती हैं। इस नाटक की कथा मे प्रथम अंक के प्रथम, दृश्य से लेकर पृथ्वीराज और संग्रामसिंह के बीज हुए द्वंद्व युध्द तक"आरंभ"कार्यावस्था मानी जा सकती है। पृथ्वीराज परम्परा के नियम को तोडकर उत्तराधिकार के प्रश्नपर चारणी देवी के मंदिरमे संग्रामसिंह पर आक्रमण करना , विदा राजपूत की हत्या, पृथ्वीराज का दण्ड स्वीकार करना, सूरजमल का पृथ्वीराज पर हमला और गोद्वार को मुक्त करने के लिए योजना बनाना इसमे"प्रयत्न"कार्यावस्था दिखाई देती है। " प्राप्ताशा " कार्यावस्था वहाँ से प्रारंभ होती है - जहाँ पृथ्वीराज ओझा की सहायता लेकर मीन नरेश की हत्या करता है , गोद्वार मुक्त होता है। पृथ्वीराज उसे महाराणा रायमल के राज्य में विलीन करके ओझा को वहाँ का सरदार घोषित करता है। महाराणा रायमल पृथ्वीराज की वीरता तथा उदारता देख निर्वासन दण्ड समाप्त करते हैं और बडे स्वागत के साथ चितौड बुलाने का प्रबंध करते हैं। " नियताप्ति " कार्यावस्था वहाँ होती है जहाँ फल प्राप्ति मे बाधा निर्माण होती है। " पृथ्वीराज " नाटक मे ऐसे प्रसंग पांच स्थानोंपर है १) चारिणीदेवी मंदिर की सेविका का निर्णय ,

---

१) " जगदीशचंद्र माथुर के " पहला राजा " का अनुशीलन " प्रा. रमेशचंद्र देशपांडे (एम-फिल) शोध प्रबंध पृ. ४५.

२) पृथ्वीराज को मेवाड की सीमा से निर्वासित करना, ३) गोढ्वार के पर्वतीय क्षेत्रमे अचानक पृथ्वीराजपर सूरजमल का हमला, ४) मेवाडपर मुज्जफर की आक्रमण और ५) चितौड के अंतिम युध्द के समय पृथ्वीराज का वहाँ न होना। " फलागम " कार्यावस्था नाटक के अंतमें पृथ्वीराज के आगमन से चितौड की विजय, पृथ्वीराज और तारा का विवाह तथा महाराणा रायमल के विजय गीत में व्यक्त होता है और उसके साथ ही कथा समाप्त होती है।

अर्थ प्रकृतियाँ :

बीज, बिंदु, पताका, प्रकरी और कार्य ये पांच अर्थ प्रकृतियां कथा के गठनमे सहायक होती है। पृथ्वीराज नाटक मे "बीज" अर्थ प्रकृति प्रथम अंक के प्रथम दृश्य मे सूरजमल के षढयंत्र मे होता है। तारा के रूप को देख कर सूरजमल उसपर मोहित होता है लेकिन तारा उसका अपमान करके चली जाती है। सूरजमल उसकी प्राप्ति की प्रतिज्ञा करता है सारंगदेव उसकी सहायता करने को तैयार होता है। दोनों मिलकर षड्यंत्र रचते है। महाराणा रायमल के स्वगत से मेवाड की राजनैतिक स्थिति का परिचय मिलता है। " इस समय पृथ्वीराज के मस्तिष्क मे मेवाड के उत्तराधिकार की समस्या चल रही है।"[१] इसमे " बीज "अर्थ प्रकृति मिलती है। यह बीज " बिन्दु " के रूपमे प्रथम अंक के तृतीय दृश्य मे अंकुरित हो विस्तार पाने लगता है , जहाँ पृथ्वीराज युवराज बनकर मेवाड के संकट को दूर करने के लिए परम्परा के नियम तोडने को तैयार होता है। " पताका " अर्थ प्रकृति के इसमे दो रूप है। दो प्रासंगिक कथाएं प्रधान रूपमे है-रावसुरताण तथा सारंगदेव की। राव सुरताण की कथा रायमल की कथा से चलकर पृथ्वीराज की कथा मे मिल जाती है , तो सारंगदेव की कथा सूरजमल की कथा में मिल जाती है। " प्रकरी " अर्थप्रकृति निम्न प्रसंग में दिखाई देता है - (१) जयमल की कथा (२) ओझा की कथा (३) करमचन्द की कथा (४) मीन नरेश की हत्या (५) मुज्जफर का आक्रमण। नाटक के अंतमे " कार्य " अर्थ प्रकृति सिध्द हो जाती है उसका दर्शन सूरजमल , सारंगदेव तथा मुजफ्फर का युध्द से भाग जाना , टोडा तथा चितौड -

---

१) पृथ्वीराज , पृष्ट . ६

की विजय , पृथ्वीराज और तारा का विवाह तथा महाराणा रायमल का विजय गीत मे होता है।

सन्धियाँ :

नाटकीय संधियाँ भी पाँच होती हैं - मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण। नाटकमे जिस स्थानपर कार्यावस्था और अर्थ प्रकृति का मेल होता है, उस स्थान को संधियाँ कहा जाता है। इस नाटकमें पृथ्वीराज के मनमे चल रहे विचारों की सूचना सूरजमल के संवादमे आता है वहाँ " मुख " संधि का उदय होकर वह प्रथम अंक के तृतीय दृश्य तक चलती है। इसके बाद चारणी देवी के मंदिरमे पृथ्वीराज का संग्रामसिंह पर हमला करना, संग्रामसिंह का भाग जाना, विदा राजपूत की जयमल द्वारा हत्या तथा पृथ्वीराज को देश निर्वासन का दण्ड आदि को " प्रतिमुख " संधि माना जा सकता है। हमला करने के बाद भी सूरजमल को क्षमा करना, मीन नरेश की हत्या करके गोद्वार को मुक्त करना, तथा पृथ्वीराज का दण्ड निर्वासन समाप्त करके चितौड बुलाने तक की घटनाएँ "गर्भ" संधि मे आती है। पृथ्वीराज के चितोड वापस आनेपर तारा का दु:खी होना तथा मुजफर का आक्रमण, यह " विमर्श " संधि के अन्तर्गत आता है। इसके बाद पृथ्वीराज का टोडा को मुक्त करके चितौड वापस आना, चितोड के युध्द मे विजय तथा पृथ्वीराज-तारा के विवाह मे"निर्वहण " संधि व्यक्त होती है और यही कथा समाप्त होती है।

डॉ. " दिनेश " ने नाटक की कथा इन नियमों के आधारपर नही लिखी है, फिर भी उसका पालन उसमे हुआ है। कथा विकास के अनुरूप दृश्य विभाजन किया है। कथा विकास मे कही भी बाधा नहीं है। नाटक मे वर्ज्य प्रसंगसूच्य कथा द्वारा बताये है। नाटक की कथा उद्देश प्रधान होने के कारण उसको पुर्ण रूपसे सफल बनाने का प्रयास नाटककारने किया है। अत: " पृथ्वीराज " नाटक की कथावस्तु नाटय शिल्प की दृष्टि से सफल मानी जा सकती है।

२) पृथ्वीराज नाटक मे चरित्र चित्रण :

पात्रों का चरित्र चित्रण नाटक का सर्व प्रमुख तत्व है। नाटक की सफलता इसी तत्वपर निर्भर होती है। नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्व है संवाद और बिना पात्रो से तो संवाद की योजना नहीं की जा सकती पात्र नाटककार के हाथों के कठपुतली न होकर अपना व्यक्तित्व स्पष्ट करनेवाले होने चाहिए जिससे दर्शक प्रभावित हो सकें।

पृथ्वीराज एक ऐतिहासिक नाटक है अत: इतिहास की घटना से संबधित व्यक्ति ही पात्र के रूपमे इसमे आते है। चरित्र चित्रण के लिए नाटक मे पात्रो की संख्या कम होना आवश्यक है लेकिन ऐतिहासिक घटना मे तथा कथा के अनुरूप भी पात्रो की संख्या अधिक हो सकती है। इस नाटकमे भी पात्रो की संख्या अधिक, करीबन ३८ पात्र इसमे है।

प्रमुख पात्र :

महाराणा रायमल, पृथ्वीराज, सुरताण, सूरजमल, सारंगदेव यह पुरुष पात्र तथा नारी पात्रों में तारा का चरित्र चित्रण प्रधान रूपमे मिलता है।

मध्यम श्रेणी के पात्र :

संग्रामसिंह , जयमल, ओझा तथा करमचंद आदि का परिचय पूर्ण रूपसे नही मिलता।अत: इन्हे मध्यम श्रेणी के पात्र कहा जा सकता है।

सामान्य पात्र :

इस नाटकमें एक दो बार और वह भी अत्यंत कम समय के लिए रंगमंच पर आनेवाले पात्रों की संख्या ही अधिक है। अत: ऐसे पात्रो को सामान्य पात्र के रूपमे देखा जा सकता है, जिनमे कला, नर्तकी, नाचनेवाली स्त्री नारीपात्र- तथा मंत्री, सेनापति , प्रधान गुप्तचर , द्वारपाल, मारू, सेवक-दोपुरुष, युवक,

सैनिक, नागरिक, दरबारी, चर, प्रहरी तथा मीन नरेश आदि पुरूष पात्रो का चरित्र चित्रण न के बराबर ही है।

इस नाटक के प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण पर विस्तार से विवेचन अगले अध्यायमे किया है अत: यहाँ केवल पात्र योजना की दृष्टी से ही विवेचन किया है। नाटकमे सामान्य पात्रो की संख्या भले ही अधिक हो तो भी नाटक की कथा को स्पष्ठ करने तथा उद्देश्य की सफलता के लिए सहायक ही है। प्रमुख पात्रों का "चरित्र चित्रण अभिनय कला को ध्यान मे रखकर किया है।"[१] इस लेखक के विचारों के अनुरूप पात्र अभिनय कला के द्वारा अपना परिचय देने में समर्थ है। पात्र का परिचय स्वगत तथा दूसरे पात्र के संवादों से ही अधिकतर मिलता है। उदा. सूरजमल का परिचय उन्ही के स्वगत कथन से मिलता है -" मैं ---- स्वर्गीय महाराणा उदयसिंह की कनिष्ठ सन्तान सूरजमल हूँ।"[२] तो तारा अपना परिचय देते हुए कहती है - "मैं टौकटोडा के राव सुरताण की पुत्री तारा हूँ।"[३] सुरताण तथा महाराणा रायमल के चरित्र चित्रण मे लेखकने स्वगत कथन का ही अधिक प्रयोग किया है।

पात्रो का परिचय अन्य पात्रों के द्वारा तथा क्रिया कलाप के द्वारा भी मिलता है। फिर भी पात्र योजना की दृष्टी से इस नाटक मे महाराणा रायमल का पुत्र "पृथ्वीराज" सबसे प्रभावी पात्र है वही इस नाटक का नायक है। समस्त घटनाओ का केंद्रबिंदु भी पृथ्वीराज है अत: इस नाटक का शीर्षक उनके नामसे दिया गया है जो उचित है। नाटक के प्रारंभ मे ही उसका आगमन न होकर अन्य पात्रों के द्वारा उसकी चर्चा की गयी है। जिससे उनका प्रवेश होते ही उनके व्यक्तित्व से पाठक या प्रेक्षक प्रभावित होते है। तारा का चरित्र नायिका के रूपमें चित्रित किया है। सुरजमल नाटक का खलनायक है। सारंगदेव उसका साथी है, तो आझा पृथ्वीराज का सहायक है।

---

१) पृथ्वीराज "भूमिका पृ.७
२) पृथ्वीराज पृ. ४
३) वहीं पृ. ४

निष्कर्ष :

पृथ्वीराज नाटक की पात्र योजना काफी संतुलित रही है। सभी पात्र कथाविकास तथा उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक है। तारा का चरित्र गीत के द्वारा और भी निखर उठा है। ऐतिहासिक कथा के अनुरूप पात्र संख्या अधिक नहीं लगती। प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण करने मे वे सहायक ही है। पात्रो के चरित्र चित्रण मे एकमात्र लेखक की त्रुटी संग्रामसिंह के चरित्र मे दिखाई देती है। इतिहास प्रसिध्दराणा सांगा को लेखक ने डरपोक तथा सामान्य व्यक्ति बताया है। अत: पात्र योजना नाटय शिल्प की दृष्टि से सफल है।

३) पृथ्वीराज नाटक में कथोपकथन :

कथोपकथन नाटक का प्रमुख तत्व माना जाता है। नाटककार पात्रों के माध्यमसे कथा को प्रभावी बनाता है , पात्रों का चरित्र कथोपकथन द्वारा स्पष्ट होता है। बिना कथोपकथन नाटक की रचना हो नहीं सकती। संवादो से कथा को गति मिलती है।कथोपकथन से ही पाठक या प्रेक्षक रंगमंच पर घटित घटनाओं को समझ सकता है।

" पात्रानुकूल एवं भावानुकूल कथोपकथन नाटक की सफलतामे योगदान देते हैं।"[१] सफल कथोपकथन योजना से ही नाटक सफल होता है। सामान्यतया आलोचक श्रेष्ठ कथोपकथन मे संक्षिप्तता, सरलता, पात्रानुकूलता एवं भावानुकूलता, कथा विकास में सहायक और चरित्र-चित्रण की क्षमता आदि विशेषताएँ होना आवश्यक समझते हैं।

" पृथ्वीराज " नाटक में प्रयुक्त कथोपकथन की समीक्षा करते समय उपर्युक्त विचारोंपर ध्यान देना आवश्यक है। पृथ्वीराज नाटक के कथोपकथन में संक्षिप्तता तथा सरलता पर दिनेशजी ने पूर्ण ध्यान दिया है। एक एक वाक्य में ही पात्र वार्ता लाप करते हैं । उदा - "[२]

---

१) मोहन राकेश के नाटक - द्विजराम यादव पृ. १४८,
२) पृथ्वीराज - पृ. ७२.

सेवक - (प्रवेश करके) आज्ञा श्रीमान ?

रायमल - मंत्री जी अभी तक नहीं आए ?

सेवक - प्रतीक्षा कर रहा हूँ श्रीमान।

रायमल - आते ही उन्हे मेरे पास भेज देना। ---- जाओ।

इस नाटक के कथोपकथन पात्रानुकूल एवं भावानुकलता के अनुरूप है। कथोपकथन से पात्रो की मनोवृतियाँ भी स्पष्ठ हो जाती है। इसके नाटक मे कई उदाहरण मिलते है। उनमे से एक नाटक के तृतीय अंक के प्रथम दृश्य मे मिलता है -

"पृथ्वीराज - मैं तुम्हारे नमक से पला , तुम्हारा चाकर नहीं , मेवाड का राणाकुमार पृथ्वीराज हूँ। ---- तुमने गोढ्वार का परगना छीनकर मेवाड के राज्य की सीमा छोटी कर दी थी। मै उसी का प्रतिशोध तुम्हारी इस गर्दन को तलवार से काट कर लूँगा।

मीन नरेश - (गिडगिडा कर) पृथ्वीराज ! --- मुझे मुक्त करदो। मै मेवाड की सीमा से बाहर चला जाऊँगा ---- कभी भी मेवाड की जनता को पीडित नहीं करूँगा ।

पृथ्वीराज - (गर्दन छोडता हुआ) मेवाड की सीमा से बाहर चला जाएगा। ---- कभी भी अत्याचार न करोगे। ---- हूँ!' ---- पृथ्वीराज सिसोदिया उस भूल को नहीं दुहराएगा जो एक बार पृथ्वीराज चौहान मुहम्मद गोरी के इसी प्रकार प्रार्थना भरे स्वरों से पिघल कर, कर चुका है। "[१] ------

इस नाटक के कथोपकथन मे कथा मे गति का निर्माण करने की शक्ति है। संवादो से उत्सुकता बढ जाती है कि,आगेक्याहोगा। इसका सुन्दर उदाहरण प्रथम अंक का चतुर्थ दृश्य है।"[२]

इसके संवादों मे चरित्र चित्रण करने की क्षमता है। सभी पात्रों का परिचय संवाद के द्वारा मिल गया है। कुछ पात्र अपना परिचय स्वंय देते है।

---

१) पृथ्वीराज पृ. ७८ -७९,
२) पृथ्वीराज पृ. २४ -२५,

पात्रों की चारित्रीक विशेषताएं कथोपकथन से स्पष्ठ हो गयी हैं। इसके संवादमे रस संचार करने की अदभुत क्षमता है। नाटककार ने व्यावहारिकता को ध्यान मे रख कर उत्तर - प्रत्युत्तर के रूपमे संवादों को गतिशील बनाया है। इस नाटक मे लम्बे स्वगत कथन है , जो पात्रो की मानसिक स्थिति का परिचय देने मे सहायक है।साथ ही लेखक ने स्वगत के द्वारा जो विचार व्यक्त किये है वह चिंतनशील है। स्वंय नाटककार इसके संवाद को पठनीय अपेक्षा साहित्यिक सुन्दरता निर्माण करनेवाले कहा है। "[१] अत: कथोपकथन की दृष्टि से पृथ्वीराज नाटक पूर्ण सफल कहा जा सकता है।

४) <u>देश काल वातावरण</u> :

नाटक की कथावस्तु जिस देश काल तथा वातावरण से संबंधित है , उसका ही चित्रण नाटककार को करना चाहिए। इसे संकलनमय भी कहते हैं। संकलनमय के बिना नाटक वास्तविक चित्र प्रस्तुत नहीं कर सकता। नाटक की यथार्थता देश काल वातावरण पर निर्भर है। अन्य नाटकों की अपेक्षा इसका महत्व ऐतिहासिक नाटक में अधिक है। ऐतिहासिक नाटक का सृजन करते समय नाटककार को इस तत्वपर अधिक ध्यान रखना पडता है।

"ऐतिहासिक नाटक की सफलता देश काल वातावरण पर निहित है। ऐतिहासिक नाटकमें ऐतिहासिक वातावरण के चित्रण से ऐतिहासिकता आ पाती है। नाटक का धरातल देश काल के चित्रण से ऐतिहासिक हो जाता है। धार्मिक , सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन के अंकन से ऐतिहासिक नाटक की ऐतिहासिकता अपने सम्पुर्ण परिपार्श्व के साथ मूर्तिमान हो जाती है। "[२]

---

१) पृथ्वीराज भूमिका पृ. ७

२) लक्ष्मी नारायण मिश्र के ऐतिहासिक नाटक : शत्रुघ्न प्रसाद. पृ. ७९

पृथ्वीराज : एक ऐतिहासिक नाटक :

" पृथ्वीराज नाटक की ऐतिहासिकता " अध्याय मे नाटक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और नाटकमे पाये जानेवाले ऐतिहासिक विवरण की विस्तार से चर्चा की है। उसके आधारपर यह नाटक ऐतिहासिक है और उसका आधार राजस्थान का इतिहास है। नाटक की कथा राजस्थान के इतिहास की महाराणा रायमल की राजनैतिक स्थिति प्रस्तुत करती है। कल्पना का सहारा न के बराबर है। ऐतिहासिक नाटक अगर पाठक या प्रेक्षक को वर्तमान से इतिहास मे ले जाने की क्षमता रखता है , तो वह सफल माना जाता है। इसके लिए यथार्थ देश काल वातावरण चित्रण की आवश्यकता है अर्थात ऐतिहासिक नाटक का प्राणतत्व देश काल वातावरण है।

वातावरण चित्रणमे युग और देश की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि समकालीन परिस्थिति का चित्रण कथावस्तुमे हो, रहन सहन की पध्दतियाँ, रीती, रिवाज, तीज , त्यौहार, परम्परा आदिका भी युगके अनुरूप चित्रण आवश्यक है। पृथ्वीराज नाटकमे इसका सुन्दर चित्रण मिलता है।

पृथ्वीराज नाटक राजनैतिक समस्या को लेकर लिखा है। राजस्थान के मेवाड राजवंश की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का चित्रण इसमे है। सं. १५३० के बाद की घटना इसमे है। मेवाड चारो ओर संकट से घिरा गया था। गोढार मे दस्यु वृति बढ गयी थी। राणाकुमार मंडलाधिशाश,जागीरदार तथा मीन जाति के लोग, इनका स्वभाव चित्रण युग के अनुरूप है। राणाकुमार उत्तराधिकार के प्रश्नपर लडते हैं। मंडलाधीश स्वार्थी तथा मीन जाति स्वंतत्रता प्राप्ति के लिए लूटमार तथा हत्या का कार्य करते हुए दिखाए गए हैं।

महाराणा रायमल शान्तिप्रिय है। युध्द न हो ऐसा प्रयत्न वे करते हैं। सूरजमल तथा सारंगदेव सत्ता लोलुपता के लिए देशद्रोह करते हैं। सुरताण लीला

अफगान से पराजित होकर रायमल के यहाँ शरणार्थी बनकर रहता है। जयमल विदा राजपूत की हत्या करता है। पृथ्वीराज मीन नरेश की हत्या करता है। सूरजमल मालवा के मुजफ्फर की सेना की सहायता से अपने ही देशपर आक्रमण करता है। पृथ्वीराज वीरता तथा निर्भयता से देश की रक्षा करता है। सुरताण का टोडा प्रदेश भी मुक्त होता है। तारा तथा पृथ्वीराज का विवाह होता है। महाराणा रायमल का शासन निष्कंटक बनाता है। यह सब तत्कालीन राजनैतिक परिस्थिति के अनुरूप ही चित्रित हुआ है।

सूरजमल का षढयंत्र , पृथ्वीराज पर जानलेवा हमला तथा मालवाधिपति मुजफ्फर की सेना सहायता लेकर देशपर आक्रमण करने का देशद्रोह तत्कालीन राजनिति में कूटनिति का स्थान था इसे स्पष्ठ करता है। मंडलाधीश तथा जागीरदार स्वतंत्र होकर विलासिता का जीवन बिताना चाहते थे। यह तत्कालीन स्वार्थ तथा सत्ता लोलुपता का चित्रण करता है। सांगदेव का चरित्र स्वार्थ से भरा हुआ है।

समाजमे असंतोष की भावना बढ गयी थी। सभी अपनी असंतुष्टता को व्यक्त करने के लिए कार्य कर रह थे। देशप्रेम की अपेक्षा देशद्रोह बढ गया था। हिंसात्मक वृत्ति समाजमे पनप रही थी। सुरताण लीला अफगानसे पराजित होकर मेवाडमे आ गया था। मालवा का मुज्जफर मेवाड को हडपने की कोशिश मे था। मीन जाति हत्या और लूटमार करके गोद्वारमे स्वंतत्र शासन निर्माण कर चुके थे। महाराणा रायमल जनता की सुखशांति के लिए शासन की ओरसे सब प्रकार की योजनाएं बनाकर आदर्श समाज निर्माण करने का कार्य करते हैं। यह नाटक राजनीति प्रधान है अत: समाज का चित्रण विस्तार से नहीं मिलता है।

निष्कर्ष :

उस युग की, मेवाड की विभिन्न परिस्थितियो का चित्रण तत्कालीन मेवाड का चित्र प्रस्तुत करता है। मंडलाधीश , जागीरदार, शासक तथा मीन जाति के लोग विलासी , अत्याचारी तथा लालची थे। इसका परिणाम यह हुआ था कि,

राष्ट्र की सुरक्षा खतरे मे थी। पडोसी शासक पारस्परिक सहयोग की अपेक्षा भेद भावना से कार्य करते थे। असंतुष्ट अपने स्वार्थ के लिए देशद्रोह करते। इस नाटकमे मेवाड की इस राजनीतिक स्थिति का यथार्थ चित्रण करके राष्ट्रीयता की भावना को बढाने का प्रयास नाटक कारने किया है। पृथ्वीराज तथा तारा का राष्ट्रप्रेम और महाराणा रायमल की आदर्श राज्य की कल्पना इतिहास पर आधारित होते हुए आज भी राष्ट्रीय एकात्मता बढाने मे सहायक है। वातावरण चित्रण को यथार्थ रूप देने मे भाषा का कार्य महत्वपूर्ण होता है जो इस नाटक मे उत्कृष्ट है।

५) <u>भाषाशैली</u> :

नाटकमे भाषाशैली का महत्व इसलिए है कि नाटककार दर्शकोंपर अपनी बातो का असर इसी के माध्यम से डालता है। उच्च कोटि का नाटकभार वही बन सकता है जो भाषाशैली का सफल प्रयोग करना हो। नाटक की भाषाशैली पर विचार करते समय जयशंकर प्रसाद के कथन को समझ लेना आवश्यक है " भिन्न भिन्न देश और वर्गवालों से उनके देश और वर्ग के अनुसार भाषा का प्रयोग करने से नाटक को भाषाओ का अजायबघर बनना पडता है, जो कहीं अधिक अप्राकृतिक हो जाता है और सामाजिकों के लिए भी इतनी भाषाओं से परिचय रखना असंभव है। इसके अतिरिक्त इस विषय की अधिकआवश्यकता भी नहीं दिखाई पडती। न जाने कितने विदेशियों को हम अपनी ही तरह हिन्दी बोलते समझ पाते है। जहाँ अपनी भावुकता और कल्पना के बल पर हम इतने बडे अभिनय को नकल और अभिनय न समझकर सच्ची घटना मानते है, और उसी के साथ हँसते रोते, सुख दु:ख अनुभव करते है , वहाँ ऐसी बात यथार्थ है अथवा अयथार्थ इसके विचार का अवसर ही कहाँ रह जाता है। जब हम सिल्यूकस और कार्नेलिया को अपने सम्मुख खडा देखते है तब वे यथार्थ मालूम पडते हैं और जब वे परिस्कृत भाषा का प्रयोग करने लगते है तब अयथार्थ हो जाते है यह भी कोई तर्क है। अतएव भाषा विविधता के लिए आग्रहन करना ही हितकर है।"[१]

---

१)

पृथ्वीराज नाटक की भाषाशैली पात्रानुकूल नहीं है। इस संबंधमें लेखक का कहना है - " मै पात्रानुकूल भाषा प्रयोग का इतना पक्षपाती नही हूँ कि हिन्दी को हिन्दी न रहने दिया जाए। मैने सर्वत्र वाक्य योजना एवं शब्द चयन में दर्शक या पाठक पर पडनेवाले भाषा प्रभाव को सामने रखा है।"[१] अत: यह स्पष्ठ है, कि नाटक की भाष। पात्रानुकूल नहीं है यह नाटक उद्देश्यप्रधान तथा ऐतिहासिक है। उद्देश्य प्रधान नाटक की भाषाशैली पात्रानुकूल की अपेक्षा विषयानुकूल तथा भावानुकूल होना आवश्यक है॥

" साहित्यकार की श्रेष्ठता इसीमें है, कि वह विषयानुकूल तथा भावानुकूल भाषा का प्रयोग करे, जिससे प्रतिपाद्य का षोषण हो सके। "[२] इस विचार के अनुरूप पृथ्वीराज नाटक की भाषा है। महाराणा रायमल के विचारों में गहराई तथा चिंतनशील प्रवृत्ति है। तारा की भाषा मनोवेज्ञानिक दृष्टि से सकल है। नाटकमे कही कहीं काव्यात्मक भाषा का प्रयोग भी हुआ है। जैसे - " इस मनोरम प्रकृति को तुम अपने क्रोध की छाया से कुरूप क्यों करना चाहती है ? देखो , प्राची मे उठता हुआ सूर्य समस्त जड चेतन सृष्टि को अलौकिक आनन्द का दान कर रहा है। ---- तुम भी प्रभात परिमल मे अपना मधुर स्वर प्राणि मात्र को वितरित करो। "[३] यह सूरजमल का कथन अथवा पृथ्वीराज के"- --- इस प्रभात वेला में धरती पर एक ही तो तारा है , और पृथ्वीराज होकर भी मै उसके दर्शन से अब तक वंचित रहा।"[४] इस कथन मे काव्यात्मकता है।

नाटक के प्रथम अंक के द्वितीय दृश्य का रायमल स्वगत कथन[५] उपहासात्मक है। जिसमे नाटक-कारने अपने ही विचारों को व्यक्त किया है। तारा के मानसिक स्थिति का चित्रण तृतीय अंक के तृतीय दृश्य मे गीत तथा संवादो में स्पष्ट हुआ है। नाटक की कथावस्तु का रंगमंच पर प्रस्तुत करते समय जो

---

१) पृथ्वीराज नाटक की भूमिका पृ. ७
२) लक्ष्मी नारायण मिश्र के ऐतिहासिक नाटक: शत्रुघ्न प्रसाद पृ. १८४.
३) पृथ्वीराज पृ. ३
४) वहीं पृ. ८८
५) वहीं पृ. ९.

घटनाएँ या प्रसंग बाधक माने जाते है ऐसे प्रसंग संकेत के द्वारा स्पष्ठ किये है। कहीं कहीं नाटककार संक्षेप मे किसी विचार को इस प्रकार व्यक्त करता है कि, वह कथन एक सूक्ति बन जाता है। शासन व्यवस्था और शासक के सम्बन्ध में महाराणा रायमल का यह कथन सुक्ति प्रधान शैली का ही है -

" जो सेवा नहीं कर सकता , उसे शासन का भार अपने कंधो पर नहीं लेना चाहिए। " [१]

नाटक के गीत , नृत्य और संगीत काव्यात्मक तथा संगीतात्मक शैली के उदा हरण हैं।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ठ है कि नाटककार ने विभिन्न शैलियो का प्रयोग इसमे किया है। वास्तव मे यह केवल दर्शक या पाठकपर प्रभाव डालने के लिए ही किया गया है। नाटक की भाषा परिस्थिति तथा प्रसंग के अनुकूल प्रेषणीयता प्रदान करते में समर्थ है। अत: यही कहा जा सकता है - " इसकी भाषा साहित्यिक है, जिसमे कवित्व के कारण सहज आकर्षण तथा भावुकतापुर्ण वातावरण का निर्माण हो सका है। "

६) उद्देश्य :

प्रत्येक साहित्यिक विधा का कोई न कोई निश्चित उद्देश्य रहता है। साहित्यकार उसकी पूर्ति के लिए ही साहित्य सृजन करता है। अन्य साहित्यिक विधाओकी अपेक्षा नाटक में उद्देश्य की अभिव्यक्ती सहज और प्रभावी होती है। मानव जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करने की क्षमता नाटकमे रहती है। ऐतिहासिक साहित्य का उद्देश्य महत्वपूर्ण होता है। जिसमें नाटककार इतिहास की घटना तथा पात्रों के जरिए वर्तमान को

---

१) पृथ्वीराज पृ. ९.

दिशा देने का प्रयत्न करता है।

" हमें देश के इतिहास से शिक्षा लेनी चाहिए। इतिहास के अध्ययन का अर्थ, तिथियों घटनाओं को याद कर लेना भर नहीं है। इतिहास तो हमें बताता है कि, हमे क्या करना चाहिए , क्या नहीं. किस तरफ जाने में पतन है. किधर जाने से उत्थान, कहाँ मरण है - कहाँ जीवन। " [१] इस विचार के अनुरूप ही पृथ्वीराज नाटक मे कुछ उद्देश्य दिखाई देते हैं। जिसका नाटककार ने भूमिका में ही स्पष्ठता से संकेत दिया है - " इस नाटक मे सहज में कुछ उद्देश्यों की अभिव्यक्ति हो गई हैं। जैसे - कुमारी कन्याओं के यौवन पर कुदृष्टि डालनेवाले युवकों का तिरस्कार, शरण में आए हुए वीरों की रक्षा और यथा शक्ति सहायता, दस्यु-प्रवृत्ति का विरोध, देश भक्तो एवं मातृ-भूमि के उध्दारकों का सम्मान तथा वीरता एवं पराक्रम की प्रतिष्ठा।

आशा है यह ऐतिहासिक नाटक पाठकों को मनोरंजन और संस्कार परिष्कार की पर्याप्त सामग्री प्रदान करेगा तथा नई पीढी के युवा वर्ग के लिए यह एक शिक्षाप्रद नाटक प्रमाणित होगा। "[२]

पृथ्वीराज नाटक में नाटककार के इन उद्देश्यों को सफलता से चित्रित किया है जिसका विस्तार के साथ विवेचन " नाटक का उद्देश्य "अध्यायमे किया है। यहाँ हम संक्षेप मे केवल इतना कह सकते हैं, कि , यह नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी उसमें व्यक्त उद्देश्यो के आधारपर समसामयिक समस्या पर प्रकाश डालने मे सफल है। नई पीढी को संस्कार प्रदान करने मे भी यह नाटक सफल है। नाटककार को उद्देश्य कथन में पूर्ण सफलता मिली है और उद्देश्य की दृष्टि से नाटक भी पूर्ण सफल है।

७) <u>रंगमंच तथा अभिनेयता</u> :

नाटक का उद्देश्य उसके अभिनय द्वारा रंगमंचपर सहज स्पष्ठ होता है।

---

१) हरिकृष्ण प्रेमी के"शपथ " नाटक की भूमिका .
२) पृथ्वीराज नाटक की भूमिका पृ. ७ - ८.

नाटक अगर रंगमंच के उपयुक्त लिखा हो, अर्थात रंगमंच के अनुरूप सभी निर्देश अगर नाटककारने दिये हो, तो वह नाटक सफल माना जाता है। इसके लिए नाटककार को कथा संगठन, पात्र योजना, संवाद तथा भाषाशैली आदि का प्रयोग रंगमंच के अनुरूप करना पडता है।

" पृथ्वीराज नाटक का सृजन नाटककार ने रंगमंच के अनुरूप ही किया है। इस सम्बन्ध मे भूमिका मे ही उन्होंने स्पष्टत: से लिखा है - " नाटक रंगमंच की वस्तु है। अत: मैने यथा स्थान दृश्यों का आयोजन एवं घटनाओं व चरित्रों का चित्रण अभिनय कला को ध्यान मे रखकर किया है। " [१] अत: इससे स्पष्ट है कि " पृथ्वीराज " नाटक मे रंगमंच तथा अभिनेयता की ओर नाटककार ने ध्यान दियाहै इसका विस्तार के साथ विवेचन " रंगमंच की दृष्टि से " पृथ्वीराज " नाटक" अध्याय मे किया गया है। यहाँ केवल यही कहा जा सकता , कि यह रंगमंच के अनुरूप अभिनेय नाटक है।

निष्कर्ष :

नाट्य शिल्प की दृष्टि से पृथ्वीराज नाटक के विवेचन से यही बात स्पष्ठ हो जाती है, कि, प्रस्तुत नाटक नाट्य शिल्प की दृष्टि से सफल है। सभी नाट्य तत्वों का निर्वाह नाटककार ने सफलता से किया है। जिसकी पुष्टि नाटक की भूमिका मे स्वंय लेखक ने दी है। अत: समग्र विवेचन के आधारपर यह सिध्द होता है, कि डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" एक कवि होते हुए भी सफल नाटककार भी है और " पृथ्वीराज " नाटक ऐतिहासिक पृष्टभूमिपर लिखा हुआ होकर आधुनिक समस्यापर प्रकाश डालने में सफल है।

---

१) पृथ्वीराज नाटक की भूमिका , पृ. ७.